इकाई 15 विद्यार्थियों की व्यवहारात्मक समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 व्यवहारात्मक समस्याओं की प्रकृति

15.3.1 बच्चों की समस्याएं

15.3.2 किशोरों की समस्याएं

15.4 व्यवहारात्मक समस्याओं के प्रकार

15.5 व्यवहारात्मक समस्याओं के कारण

15.5.1 व्यक्तिगत तथा सामाजिक आवश्यकताएं

15.5.2 परिपक्वता के प्रभाव

15.5.3 शिक्षक तथा कक्षाकक्ष की परिस्थितियाँ

15.5.4 सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

15.5.5 घर की परिस्थितियाँ

15.5.6 आकस्मिक त्रुटि

15.6 व्यवहारात्मक समस्याओं का सामना करने के सुझाव

15.6.1 क्या दण्ड व्यवहार को सुधारता है?

15.6.2 व्यवहार प्रबंधन हेतु तकनीक

15.6.3 व्यवहार परिष्करण हेतु तकनीक

15.7 उपचारात्मक युक्तियाँ

15.7.1 शिक्षकों की भूमिका

15.7.2 माता-पिता की भूमिका

15.7.3 परामर्शदाता/मनोवैज्ञानिक की भूमिका

15.8 सारांश

15.9 इकाई अन्त अभ्यास

15.1 प्रस्तावना

अधिकांश बच्चों को कभी न कभी व्यवहार संबंधी कुछ समस्याएं होती हैं। व्यवहार संबंधी समस्याएं बच्चे के भीतर की परिस्थितियों से अथवा बाहरी प्रभावों से उत्पन्न होती हैं जिनके परिणामों पर अक्सर दूसरों के द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता अथवा समझा नहीं जाता। व्यवहार संबंधी समस्याओं की व्यापकता अत्यधिक अंतर्मुखी हो जाने से लेकर अत्यधिक शत्रुतापूर्ण आक्रामक हो जाने तक हो सकती है।

एक कक्षाकक्ष में, विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का प्रदर्शन किया जाता है। शिक्षकों द्वारा कक्षाकक्ष में सभी प्रकार की व्यवहार संबंधी समस्याओं का सामना करना वांछित होता है। इस इकाई में, हम विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाईयों के बारे में अधिक समझने का प्रयास करेंगे, जिनके परिणामस्वरूप कई प्रकार की व्यवहार संबंधी समस्याएं होती हैं। शिक्षकों तथा माता-पिता के लिए उन कारकों की समझ विकसित करना महत्वपूर्ण है जिनके परिणामस्वरूप समस्याजनक व्यवहार उत्पन्न होता है। इस

इकाई में हम व्यवहार संबंधी समस्याओं की प्रकृति तथा उनके कारणों की व्याख्या करेंगे। हमने उपचारात्मक उपायों तथा व्यवहार संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए रणनीतियों पर भी चर्चा की है। इस इकाई के अध्ययन से जो समझ आपको प्राप्त होगी वह आपको सक्षम बनायेगी कि आप अपने विद्यार्थियों में व्यवहार संबंधी समस्याओं की पहचान कर सकें तथा उन समस्याओं का सामना करने व उनके व्यवहार को बदलने में उनकी सहायता कर सकें।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप सक्षम होंगे कि आप :

- व्यवहार संबंधी समस्याओं की पहचान कर सकें;
- बच्चों तथा किशोरों में विभिन्न प्रकार के व्यवहार संबंधी समस्याओं में अन्तर कर सकें;
- व्यवहार संबंधी समस्याओं के कारणों की व्याख्या कर सकें;
- व्यवहार संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे विद्यार्थियों को सुझाव दे सकें; तथा
- व्यवहार संबंधी समस्याओं के प्रबंधन में माता-पिता तथा शिक्षकों की भूमिका की व्याख्या कर सकें।

15.3 व्यवहारात्मक समस्याओं की प्रकृति

व्यवहार संबंधी समस्याएं भीतर की परिस्थितियों से अथवा बाहरी प्रभावों से उत्पन्न होती हैं जिनके परिणामों पर अक्सर दूसरों के द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता अथवा समझा नहीं जाता। अक्सर, ऊपरी तौर पर सामान्य बच्चों में भावनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक कारक, आसानी से नजर या समझ नहीं आते लेकिन उनपर अवसाद, बैर, अंतर्मुखी अथवा तनाव से लड़ने के लिए दिवास्वप्न देखने का लेबल लगा दिया जाता है।

वे टूटे हुए तथा लैंगिक, भावनात्मक अथवा शारीरिक रूप से प्रताड़ित हो सकते हैं। इनमें से अधिकांश बच्चे अक्सर नियमित कक्षाकक्ष में बिना समझे गये, अपनी समस्याओं का सामना (स्वयं से) करने का प्रयास कर रहे होते हैं।

शिक्षक और माता-पिता अपने बच्चों की व्यवहार संबंधी समस्याओं से निपटने की चुनौती का सामना करते हैं। बच्चों की व्यवहार संबंधी समस्याएं अक्सर अधिगम प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न करती हैं तथा उनके शैक्षिक कार्यक्रम से असंगत होते हैं।

एक शिक्षक के लिए उन कारकों को समझना आवश्यक है जो उनके विद्यार्थियों की व्यवहार संबंधी अवलोकनीय समस्याओं के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं। विद्यार्थी के व्यवहार के पीछे के कारणों के समझ की कमी, शिक्षक ऐसी प्रतिक्रिया दे सकते हैं जिससे समस्या और अधिक बढ सकती है। व्यवहार में समस्या वाले विद्यार्थी कक्षाकक्ष में शिक्षकों के लिए चुनौती उत्पन्न करते हैं।

व्यवहार संबंधी समस्याओं की व्यापकता अत्यधिक अंतर्मुखी हो जाने से लेकर अत्यधिक शत्रुतापूर्ण आक्रामक हो जाने तक हो सकती है। ऐसे विद्यार्थियों को, उनके स्कूल के दिनों में यदि पहचान कर सहायता नहीं प्रदान की जाती है तो उनकी समाज के साथ व्यवहार करने में कठिनाई बनी रह सकती है और जीवन में आगे चलकर उनकी समस्या बढकर और अधिक गंभीर हो सकती है।

विद्यार्थियों की कई शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक आवश्यकताएं होती हैं जो उनकी वृद्धि तथा विकास के लिए मूलभूत होती हैं। ऐसी ही कुछ आवश्यकताओं को नीचे सूचीबद्ध किया गया है।

शारीरिक आवश्यकताएं :

– उचित भोजन, वस्त्र

– दर्द, बीमारी से सुरक्षा

– खेलने के लिए समय

मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं :

– एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाना

– भावनात्मक संतुष्टि

– निरंतर आश्वासन

– स्नेह

– भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के विनियमन में सहायता देना

– अपनी लैंगिक विशिष्टता को स्वीकार करने में सहायता देना

– दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करें यह सीखने में सहायता देना

शैक्षिक आवश्यकताएं :

– शिक्षा जो डर न उत्पन्न करे

– अध्ययन में सहायता

– विद्यालय में स्नेह तथा समझ से पूर्ण वातावरण

– उपलब्धि का एहसास

– जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा

– नया सीखने के लिए प्रोत्साहन

यह सभी आवश्यकताएं एक-दूसरे से जुडी हुई हैं। वे एक-दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करते हैं तथा बढते बच्चे पर अपनी छाप छोड़ते हैं।

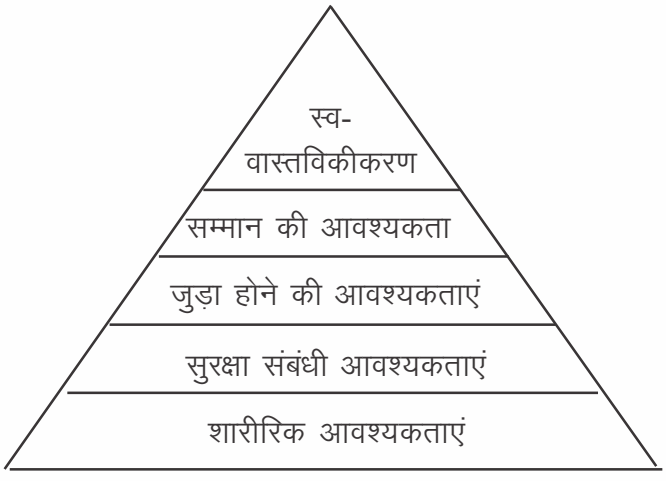

मानव आवश्यकताएं

अब्राहम मैसलॉ (1970) ने मानव अभिप्रेरणा को आवश्यकताओं के अनुक्रम के रूप में देखा, जिनमें शारीरिक आवश्यकताओं को सबसे आधारभूत तथा स्व-वास्तविकीकरण को सर्वोच्च माना। हमारी शारीरिक आवश्यकताओं के पूरा होने के बाद ही हम उच्चतर आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए कार्य कर सकते हैं।

15.3.1 बच्चों की समस्याएं

बच्चों के व्यवहार संबंधी कुछ लक्षण हैं– अत्यधिक शर्मीलापन, भयभीत रहना, आक्रामकता, ध्यान आकर्षित करना, अतिसक्रियता, अत्यधिक निर्भर होना, दिवा-स्वप्न देखना, झूठ बोलना तथा धोखा देना, चोरी करना आदि।

इनमें से कई समस्याओं का सामना शिक्षकों/माता-पिता द्वारा पुरस्कार के माध्यम से किया जाता है जैसे कि बड़ों के द्वारा प्रशंसा, हालांकि, ऐसी समस्याओं के लिए उत्तरदायी सामाजिक परिस्थितियों की उनकी समझ अत्यन्त सीमित होती है तथा उन्हें इस बात को स्वीकार करने में कठिनाई हो सकती है कि उनका व्यवहार किस प्रकार बच्चों को प्रभावित करता है अथवा बच्चे ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं।

15.3.2 किशोरों की समस्याएं

किशोरावस्था को अक्सर स्वतंत्रता के अत्यधिक प्रयास तथा वयस्क प्रभुत्व की ओर विद्रोह के लिए जाना जाता है। माता-पिता तथा स्कूल के निरीक्षण से समस्या, नशीले पदार्थों तथा शराब का दुरुपयोग, अकारण अनुपस्थित रहना, चोरी तथा लैंगिक प्रयोग इस उम्र में सामान्य है। इसलिए, यह आश्चर्यजनक नहीं है कि ऐसी समस्याओं के साथ किशोरों को सामान्यतः वयस्कों के प्रति (जिसमें चिकित्सक भी शामिल हैं) शंकालु, विद्रोही, अवज्ञापूर्ण तथा इलाज के प्रयासों के प्रति प्रतिरोधी पाया जाता है। ऐसे अनिच्छुक किशोर, अपनी समस्याओं के लिए दूसरों पर दोषारोपण कर सकते हैं तथा अपने व्यवहार में परिवर्तन के लिए उनमें प्रेरणा का अभाव हो सकता है। कम भयसूचक तथा अधिक लुभावने वातावरण के निर्माण के लिए तथा व्यवहार परिवर्तन के लिए मित्र समूह के समर्थन को सूचीबद्ध करने के प्रयास के लिए अक्सर किशोरों के साथ समूह चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। किशोर, जो कि मुख्यतः भयपूर्ण, अंतर्मुखी, अवसादग्रस्त अथवा मानसिक रूप से भ्रमित होते हैं, उन्हें व्यक्तिगत चिकित्सा प्रदान की जाती है।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) रिक्त स्थानों को भरें :

i) व्यवहार संबंधी समस्याएं बच्चे के ..... परिस्थितियों से अथवा . ..... से उत्पन्न होती हैं जिनके परिणामों को अक्सर दूसरों द्वारा नहीं समझा जाता।

ii) व्यवहार संबंधी समस्याएं .....से अत्यधिक ..... तक व्यापक होती हैं।

iii) मैसलॉ के अनुसार ..... मानव की सबसे मूलभूत आवश्यकताएं हैं तथा ..... मानव की सर्वोच्च आवश्यकता है।

15.4 व्यवहारात्मक समस्याओं के प्रकार

बच्चों में अवलोकित कुछ व्यवहार संबंधी समस्याओं की व्याख्या नीचे की गयी है :

1) **कक्षाकक्ष में व्यवधान :** विद्यार्थी उस सीमा तक शरारत करता है तथा सहपाठियों को कष्ट पहुँचाता है, दूसरों के काम में व्यवधान पहुँचाता है तथा यह जल्द ही शोर उत्पन्न करने बदल जाता है।

2) **अधीरता :** वह सीमा जिस तक विद्यार्थी बहुत जल्दी से काम शुरू करता है, काम में लापरवाह है, अपने काम की समीक्षा के लिए तैयार नहीं है तथा काम में हड़बड़ी करता है। शारीरिक रूप से अति सक्रिय तथा आकुल है।

3) **असम्मान-अवज्ञा :** वह सीमा जिस तक बच्चे शिक्षकों से असम्मानपूर्वक बोलते हैं, जो करने के लिए कहा जाए उसका प्रतिरोध करते हैं, किये जा रहे काम को छोटा बताते हैं, तथा कक्षाकक्ष के नियम भंग करते हैं।

4) **उपलब्धि संबंधी व्यग्रता :** वह सीमा जिस तक बच्चे परीक्षाओं तथा अंकों के बारे में परेशान हो जाते हैं तथा आलोचना या सुधार के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।

5) **बाहरी भरोसा :** वह सीमा जिस तक बच्चे निर्देश के लिए औरों की ओर देखते हों, उन्हें सटीक निर्देशों की आवश्यकता होती हो तथा स्वयं से निर्णय लेने में कठिनाई होती हो।

6) **अनमना-अन्तर्मुखी :** वह सीमा जिस तक बच्चा एकाग्रता खो देता है, कक्षा में जो कुछ भी हो रहा हो उसके प्रति अनमना रहता है तथा पहुँच या संपर्क के लिहाज से मुश्किल होता है, या खोया रहता है।

7) **अप्रासंगिक-प्रतिक्रियाशीलता :** वह सीमा जिस तक बच्चा अतिशयोक्तिपूर्ण कहानियाँ सुनाता है, अप्रासंगिक उत्तर देता है, शिक्षक के बोलने के दौरान बाधा पहुँचाता है तथा कक्षा में चर्चा के दौरान अप्रासंगिक टिप्पणियाँ करता है।

8) **शिक्षक के सामिप्य की आवश्यकता :** वह सीमा जिस तक बच्चा कक्षा से पूर्व अथवा पश्चात शिक्षक को ढूंढता है, शिक्षक के काम करने को आगे आता है, शिक्षक के साथ मित्रवत है तथा शिक्षक के निकट रहना पसन्द करता है।

9) **व्यग्रता-अवसाद :** बच्चा तनाव में दिखता है और उसका चेहरा लटका हुआ तथा सख्त नजर आता है, छोटी सी बात पर भी आसानी से रो देता है, किसी से बातचीत नहीं करता, चीजों में कोई रुचि नहीं लेता। बच्चा परीक्षा तथा परीक्षा के अंकों के बारे में परेशान हो जाता है, आलोचना अथवा सुधार के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

10) **शान्त तथा अन्तर्मुखी :** बच्चा कक्षा में अन्तर्मुखी तथा शान्त है, उसके दोस्त नहीं हैं तथा वे अधिकांशतः अलग-थलग है। आत्म केन्द्रित, अपने ही विचारों तथा समस्याओं में ध्यानमग्न होने की ओर प्रवृत्त है तथा अन्य किसी भी चीज में उदासीन है अथवा किसी भी चीज के बारे में निरूत्साहित है।

11) **आक्रामकता तथा हिंसा :** एक शत्रुतापूर्ण अथवा क्रोधी व्यवहार जो किसी व्यक्ति अथवा संपत्ति को नुकसान पहुँचाने की ओर निर्देशित हो।

12) **ध्यान की कमी :** विद्यार्थी को किसी भी समय अन्तराल में दिये गये कार्य अथवा निर्देशों में ध्यान देने में कठिनाई है। आसानी से उसका ध्यान बँट जाता है, अत्यधिक चंचल है, स्थिर बैठने में कठिनाई अनुभव करता है।

13) **अकारण अनुपस्थित होना :** बच्चा जो अक्सर अस्पष्ट कारणों के लिए अथवा मामूली बीमारी के लिए विद्यालय से अनुपस्थित रहता है।

14) **शारीरिक चोट :** बार-बार तथा कई चोट देखे जाते हैं जिनके लिए कोई पर्याप्त कारण नहीं दिया जाता, इलाज में देर की जाती है, पट्टे के चोट, काटे जाने तथा जलने के निशान।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

2) दिये गए वक्तव्यों को सत्य अथवा असत्य के रूप में स्पष्ट करें।

i) बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याओं का झुकाव कक्षाकक्ष की कार्यवाही में व्यवधान उत्पन्न करने की ओर होता है। (सत्य/असत्य)

ii) विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धियाँ तथा उनका बौद्धिक विकास उनकी व्यवहार संबंधी समस्याओं से प्रभावित नहीं होता। (सत्य/असत्य)

iii) अक्सर व्यवहार संबंधी समस्याओं वाले एक बच्चे का कोई दोस्त नहीं होता है। (सत्य/असत्य)

iv) व्यवहार संबंधी समस्याओं वाले बच्चों को अक्सर शिक्षकों तथा माता-पिता द्वारा नकार दिया जाता है। (सत्य/असत्य)

v) व्यवहार संबंधी समस्याएं प्रदर्शित करने वाले बच्चों को आगे उनके वयस्क जीवन में और अधिक कठिनाई होगी। (सत्य/असत्य)

3) व्यवहार कब व्यवहार संबंधी समस्या बन जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

15.5 व्यवहारात्मक समस्याओं के कारण

पूरी संभावना है कि बच्चे के व्यवहार संबंधी समस्याओं का कारण, योगदान देने वाले कुछ कारकों का एक खास मिश्रण हो जिसकी चर्चा हम करेंगे। साथ ही संभवतः कुछ अन्य कारक भी हों जिनसे हम अबतक परीचित नहीं हैं या जिन्हें अनदेखा कर दिया गया हो।

15.5.1 व्यक्तिगत तथा सामाजिक आवश्यकताएं

एक बच्चे की ध्यान दिये जाने, पहचाने जाने, स्वीकार किये जाने तथा संबंधित होने की आवश्यकता ठीक वैसी ही वास्तविक और प्रबल हैं जितनी की भोजन और पानी की आवश्यकता। ध्यान नहीं दिये जाने पर एक बच्चा ऐसी गतिविधि का सहारा ले सकता है जिससे वह ध्यान आकर्षित कर सके।

एक बच्चा अथवा किशोर अक्सर नहीं जानते हैं कि उपयुक्त तरीके से सामाजिक संतुष्टि किस प्रकार प्राप्त की जाए। उदाहरण के लिए, धौंस दिखाने वाला, झूठ बोलने वाला, दिखावा करने वाला, मजाकिया, आदतन बाधा पहुँचाने वाला – संभवतः सामाजिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के प्रयास का ही परिणाम हैं।

सामाजिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त, आत्म-सम्मान की आवश्यकता, यह महसूस करने की आवश्यकता कि एक व्यक्ति के रूप में वह स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर है, यह सब अवज्ञा, असहयोग, बिगड़ैल बनने, सुनने के बजाए उस समय बोलने, या अपनी बारी की प्रतीक्षा करने के बजाए धक्का-मुक्की करने के रूप में भी अभिव्यक्त हो सकती है।

बच्चे जो स्पष्ट तौर पर मानसिक क्षमता में औसत से कम हैं, वे अक्सर अपनी सामाजिक तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानदण्डों से भटक जाते हैं, क्योंकि यह दूसरी तरह से पूरा नहीं हो रहा होता है।

15.5.2 परिपक्वता के प्रभाव

इस बात पर ध्यान दिये गये बगैर की एक व्यक्ति की काल-संबंधी आयु अथवा मानसिक आयु क्या हो सकती है, संभव है कि वह आत्म-नियंत्रण में या मानवीय संबंधों में एक अपने से कुछ साल छोटे एक औसत व्यक्ति जितना परिपक्व न हो। व्यवहार संबंधी समस्याएं जैसे कि गुस्से में नखरे करना, नकारात्मकता, ऊष्म तथा ध्यान चाहने की प्रवृत्ति अपरिपक्वता के संकेत हैं।

अन्य योगदान देने वाले कारकों में से एक है व्यक्ति का शारीरिक विकास। उदाहरण के लिए, एक कम ऊँचाई वाला लड़का, स्वयं के साथ-साथ दूसरों पर भी यह प्रदर्शित करने के लिए कि वह कम लम्बाई के बावजूद वह गंभीरता से लिए जाने वाली शक्ति है, वह अवज्ञाकारी, आक्रामक तौर-तरीके अपना सकता है। मोटा बच्चा अपनी कक्षा में बने अपनी मजाकिया छवि को जीने का प्रयास कर सकता/सकती है। बड़ा बच्चा किसी शरारत पर विचार किये जाने पर समूह के सरदार की तरह व्यवहार कर सकता/सकती है, क्योंकि उसके लिए भी अपनी प्रतिष्ठा को बचाए रखने का प्रश्न होता है। उसका मित्र-समूह उससे कुछ हद तक उद्दण्ड व्यवहार की अपेक्षा रखता है और वह उन्हें निराश नहीं कर सकता/सकती।

15.5.3 शिक्षक तथा कक्षाकक्ष की परिस्थितियाँ

कुछ व्यवहार संबंधी समस्याओं के लिए शिक्षक उत्तरदायी हो सकता है। यह विचार से परे है कि कोई शिक्षक लगातार दुर्व्यवहार को आमंत्रण देगा, लेकिन कई अनजाने में ऐसा करते हैं। ऐसे शिक्षक जो अपने विद्यार्थियों को ताने मारते हैं अथवा अपमानित करते हैं तथा जो उनके प्रति पूरी तरह से अन्यायपूर्ण होते हैं, वे विद्यार्थियों से शत्रुता मोल लेते हैं तथा ऐसे में विद्यार्थी भी प्रतिशोध की भावना से भर जाते हैं।

दुविधा में पड़ा हुआ शिक्षक जिसकी कोई तय नीति न हो, वह भी विद्यार्थियों के दुर्व्यवहार में योगदान देता है, क्योंकि ऐसे में विद्यार्थी यह आजमा सकते हैं कि वे शिक्षक के नाराजगी जताने तक क्या कुछ कर सकते हैं। शिक्षक जो सरल होते हैं, जो विद्यार्थियों के 'सखा' बनने का प्रयास करते हैं, वे ऐसे अन्य प्रकार हैं जो व्यवहारिक रूप से कक्षा को आमंत्रित कर रहे होते हैं कि चाहे जो मर्जी हो करो।

शिक्षक की विधि तथा व्यक्तित्व, अशोभनीय व्यवहार संबंधी समस्याओं में योगदान दे सकता है। यदि कक्षा का काम अरुचिकर है, यदि विद्यार्थियों की रुचि तथा ध्यान नहीं पाया जा

सकता, यदि उनके लिए करने को बहुत थोड़ा है व सिर्फ बैठकर सुनना या पढना है, यदि पाठों की योजना अच्छी तरह से नहीं बनायी गयी है और यदि कक्षा की समय-सारणी के सामान्य मामलों को ठीक से व्यवस्थित नहीं किया गया है, यदि हर विद्यार्थी को कोई उपयुक्त काम नहीं दिया गया है, यदि शिक्षक चर्चाओं को नियंत्रण से बाहर जाने देते हैं जिससे वह जगह-जगह पर हो रही आपसी वार्तालाप में बदल जाए, शिक्षक ऐसा वातावरण तैयार करने का प्रयास करने में सहायता कर रहा हो जिसमें अनुशासन संबंधी समस्याओं के होने तथा बढने की संभावना हो।

कक्षा का भौतिक आयाम वह अन्य पहलू है जिसपर विचार किया जाना चाहिए, विशेषकर कक्षाकक्ष का आकारा, विद्यार्थियों की संख्या तथा बैठने संबंधी व्यवस्थाएं। कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या जितनी अधिक होगी, हर एक के लिए वांछित ध्यान पाने के अवसर उतने ही कम होंगे। दूसरा, कक्षाकक्ष में जितनी अधिक भीड़ होगी, एक विद्यार्थी के लिए शरारत करने का प्रलोभन भी उतना ही अधिक होगा, वह भी सिर्फ इस कारण से कि उसे अलग से देखना और उसपर नजर रखे जाने की अधिक संभावना नहीं होगी। निश्चय ही यह बहुत संभव है, कक्ष की भीड़-भाड़, शारीरिक गतिविधियों को सीमित करने के कारण विद्यार्थी के भौतिक आराम पर असर डाले, जो कि एक सामान्य कक्षाकक्ष व्यवहार के लिए हितकर नहीं है।

कक्षाकक्ष के भीतर उप-समूह, व्यक्तिगत व्यवहार पर काफी प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, मोहन तथा राम, एक साथ बैठते ही व्यवधान उत्पन्न करना प्रारंभ करते हैं। उनका परस्पर प्रभाव एक दूसरे के सर्वाधिक अवांछित गुणों को सामने लाने वाला प्रतीत होता है। हालांकि, यदि उन्हें दूसरे विद्यार्थियों के बगल में बैठाया जाता है तो व्यवहार संबंधी समस्या नहीं उत्पन्न होती।

15.5.4 सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों में से वैसे कारक जिन्हें बच्चों तथा युवाओं द्वारा दुर्व्यवहार में योगदान देने वाला पाया गया है, वे हैं– कुछ टेलीविजन कार्यक्रम, फिल्में, कथाचित्र तथा पत्रिकाएं जिसमें हिंसा, डर, पीड़ा – आनन्द, शराफत तथा नैतिकता संबंधी सिद्धान्तों के लिए अपमान आदि होता है। किशोर-किशोरियों की व्यवहार संबंधी समस्याओं की व्याख्या अक्सर उस अनुपयुक्त परिस्थितियों के रूप में की जाती है जिसमें वे रह रहे होते हैं। भेदभाव, उत्पीड़न तथा वर्ग, जाति, धर्म या राष्ट्रीयता के अवसरों की असमानता भी युवा लोगों में व्यवहार संबंधी समस्याओं में योगदान कर सकते हैं।

15.5.5 घर की परिस्थितियाँ

विभिन्न प्रकार की असंतोषजनक घरेलू परिस्थितियाँ भी विद्यार्थियों को दुर्व्यवहार में योगदान करने वाला कारक हो सकती हैं। बच्चे, जो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु के कारण, तलाक के कारण, उनके अलग हो जाने के कारण अथवा व्यवसायिक या सामाजिक कारण से लम्बे समय तक उनमें से एक या दोनों की अनुपस्थिति के कारण खण्डित परिवारों में रहते हैं, वे एक दृढ परन्तु स्नेहमय लालन-पालन वाले मार्गदर्शन से वंचित रह जाते हैं जिसकी आवश्यकता उन्हें संतोषजनक रूप से विद्यालय जीवन में सामंजन के लिए आवश्यक होता है। नकारा गया महसूस करते हुए वे विभिन्न प्रकार के अवांछित व्यवहार के माध्यम से इसकी छतिपूर्ति का प्रयास कर सकते हैं।

जब परिवार में माता-पिता अथवा घर के अन्य वयस्क घर के वातावरण में अपने शब्दों अथवा कार्यों द्वारा यातायात के नियम भंग कर दण्ड से बचने का कार्य करते हैं; जब वे एक

दूसरे के प्रति बेशर्म तथा कठोर होते हैं; जब वे एक-दूसरे के अधिकारों तथा गरिमा का सम्मान करने में असफल रहते हैं; अथवा जब वे दूसरों के बारे में भला-बुरा कहते हैं, बच्चे भी सामाजिक अथवा नैतिक परंपरा का अपमान करना सीखते हैं।

कुछ विद्यार्थियों को उनके हिस्से का ध्यान तथा पहचान कभी भी नहीं मिलता, कुछ को यह बहुत ज्यादा मिलता है। वे जिनकी हर ख्वाहिश पूरी होती है या जिनकी मरजी कभी भी नहीं नकारी जाती, उन्हें इस विश्वास की आदत हो जाती है कि पूरी दुनिया उनकी सेवा के लिए ही है। जब ऐसे विद्यार्थी अपने आप को ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं जहाँ उनसे ऐसे काम करना अपेक्षित होता है जो तुरंत आनन्ददायी नहीं होता अथवा समूह के अच्छे के लिए निर्धारित किया गया होता है, उन्हें यह समझ नहीं आता कि वे कैसे व्यवहार करें। बच्चे जो आक्रामकता तथा समस्याजनक व्यवहार में लिप्त होते हैं वे अक्सर ऐसे घरों से आते हैं जहाँ माता-पिता अयोग्य अनुशासक होते हैं, कठोर तथा अत्यधिक दण्ड का प्रयोग करते हैं, तथा अच्छे व्यवहार के लिए अत्यन्त सीमित प्यार तथा स्नेह का प्रदर्शन करते हैं।

15.5.6 आकस्मिक त्रुटि

कुछ मामलों में, उपरोक्त में से काई भी कारक उपयुक्त नहीं हो सकता है। अभद्र व्यवहार की व्याख्या सरल कारण से हो सकती है कि विद्यार्थी विशिष्ट नियमों के विषय में अनभिज्ञ थे अथवा यह कि वे इसके बारे में भूल गये थे, या उन्हें यह नहीं लगा कि इसे लागू किया जाएगा, या यह कि वे क्षणिक उत्साह के आवेग में बह गये और ऐसा कुछ कर गये जो वह जानते हैं कि उन्हें नहीं करना चाहिए था तथा नहीं करते यदि उन्हें ऐसा करने से पूर्व रोक दिया गया होता।

अकारण अनुपस्थित रहना

विद्यालय से अकारण अनुपस्थित रहने का दो में से एक अर्थ हो सकता है:

i) विद्यार्थी एक असहनीय परिस्थिति से दूर भाग रहा है, जिसमें कि विद्यालय कार्यक्रम असफलता, शर्मिन्दगी, अपमान तथा साथियों से उपहास के सिवा और कुछ नहीं दे रहा; अथवा

ii) विद्यार्थी गंभीर भावनात्मक द्वन्द्व से जुझ रहा है।

दोनों ही परिस्थितियों में अकारण अनुपस्थित रहना एक ऐसा लक्षण है जो एक मनोवैज्ञानिक अथवा एक जिम्मेदार वयस्क द्वारा तुरंत ध्यान दिये जाने की माँग करता है।

उदाहरण

सुनील एक उच्च-मध्य वर्गीय परिवार के दो बच्चों में से एक था। माता-पिता सुशिक्षित, गंभीर स्वभाव के धार्मिक प्रवृत्ति वाले लोग थे। पिता जीवन के धार्मिक तथा नैतिक पक्षों के विषय में माता से अधिक सख्त थे। वह बच्चों को लगातार अत्यधिक कठिन मानदण्डों पर रखते थे जिसे वे पूरा नहीं कर पाते थे। दोनों बच्चे तीव्रबुद्धि थे, लेकिन वे अपनी अपूर्णता की भावना के कारण विद्यालय में अच्छा नहीं कर पाते थे। वे माता-पिता के प्रति क्रोधी व द्वेष भावना से भी भर गये। सुनील को खराब अकादमिक उपलब्धियों के कारण एक ही कक्षा को दोहराने के लिए भी कहा गया। यह संवेदनशील बच्चे के लिए कठोर आघात था तथा इसने उसके भीतर की अपूर्णता की भावना तथा क्रोध को और अधिक बढा दिया। वह विद्यालय की गतिविधियों में अंतर्मुखी होने लगा। सुनील का बिना कारण विद्यालय से अनुपस्थित रहना अब लगातार मामूली रूप से बीमार रहने के साथ होने लगा जिससे वह एक बार में एक या दो दिनों के लिए विद्यालय से अनुपस्थित रहने लगा। अन्ततः, उसने

विद्यालय जाने से मना कर दिया। माँ ने थोड़े समय तक, बिना कारण अनुपस्थित रहने वाली बात बीमारी के नाम पर पिता तथा विद्यालय से छिपायी। बाद में उन्हें सुनील की परेशानी की गंभीरता का एहसास हुआ तथा उन्होंने एक मनोवैज्ञानिक से सहायता माँगी।

इन विद्यार्थियों को अपनी भावनात्मक परेशानी तथा परिवार से भावनात्मक सहयोग के अभाव से होने वाली समस्याओं का सामना करने के लिए त्वरित तथा विचारवान रूप से ध्यान दिये जाने की आवश्यकता होती है।

अंतर्मुखी

रानी छठी कक्षा में थी। शिक्षक ने गौर किया कि वह आसामान्य रूप से शान्त थी, वह दूसरे विद्यार्थियों के साथ बात नहीं कर रही थी; वह उनके साथ खेल नहीं रही थी। दूसरे विद्यार्थी उसकी उपेक्षा कर रहे थे। रानी की सहायता के लिए, शिक्षक ने उसे विशेष कार्य देने का अथवा अन्य शान्त या मित्रवत विद्यार्थी को उसके साथ बिठाने का प्रयास किया। रानी ने चुपचाप अपना कार्य किया लेकिन उसकी सामाजिक परस्पर क्रिया अत्यन्त सीमित रही। शिक्षक ने यह तय किया कि यह सब उसकी सहायता नहीं कर रहा था, इसलिए उन्होंने उसकी माँ को बुलवाया। शिक्षक ने रानी की माँ से उसके अन्तर्मुखी शान्त व्यवहार के विषय में बात की। उन्हें यह एहसास हुआ कि रानी के छोटे भाई पर माता-पिता द्वारा कहीं बहुत अधिक ध्यान दिया जा रहा था तथा इस छोटी-सी उम्र में उसपर जिम्मेदारियों का भार डाल दिया गया था।

शिक्षक और माँ ने रानी को चिंतामुक्त करने में सहायता करने के तरीके सोचे। इसके लिए उन्होंने उसकी जिम्मेदारियाँ कम करने तथा उसे 'आनन्द' के अधिक अवसर देने के विषय में विचार किया। शिक्षक ने रानी को अन्य लड़कियों के साथ अधिक सृजनात्मक तथा आनन्द वाली गतिविधियों में शामिल किया जैसे कि कठपुतलियाँ बनाना। वर्ष के अन्त तक रानी अब भी 'शर्मीली' तो थी मगर अब वह शान्त/अकेली बच्ची नहीं थी जैसी वह अकादमिक वर्ष के प्रारंभ में थी।

चोरी करना

यह कुछ अशांत बच्चों के बीच देखा गया एक सामान्य लक्षण है। उदाहरण के लिए, शिक्षक ने पाया कि विद्यार्थी कल्याण राशि में 500/– रुपये कम हैं। हालांकि, कुछ दिनों पहले शिक्षक ने कुछ विद्यार्थियों को यह बातचीत करते सुना था कि रमेश ने अपने दोस्तों को लगातार दो शाम पेप्सी और अल्पाहार की दावत दी थी।

शिक्षक सतर्क था और उसने इन दो बातों को साथ रखा। शिक्षक ने रमेश से अलग से बातचीत की। कुछ झूठ बोलने के कुछ प्रयासों के बाद, उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली। रमेंश की पृष्ठभूमि के संबंध में पता लगाने पर शिक्षक को यह मालूम हुआ कि वह एक और आर्थिक पृष्ठभूमि से था जबकि उसके दोस्त ऊँचे सामाजिक-आर्थिक मानदण्ड वाले थे। समूह में दूसरों की तरह ही खर्च करने के लिए उसने पैसे चुराये जिससे कि वह भी दिखावा कर सके तथा अपने दोस्तों की दावत कर सके।

शिक्षक ने तय किया कि वह रमेश से चुराये गये पैसे किश्त योजना के तहत वापस लेंगे। तीन सप्ताह में रमेश ने कर्ज चुका दिया। जिस प्रकार रमेश ने अपना वादा पूरा किया तथा चीजें सही की, उसके लिए शिक्षक ने रमेश को बधाई दी।

यह उदाहरण प्रदर्शित करता है कि क्षतिपूर्ति का 'सही करने' का तरीका दण्डित करने के उपायों जैसे कि विद्यालय से निष्कासन, गलत होने के लिए स्कूल के बाद रोकना अथवा

किशोरों को रोके जाने वाले समय के लिए भेजने से बेहतर है। क्षतिपूर्ति के पश्चात् यदि उपयुक्त पुरस्कार हो तो यह एक अत्यंत प्रभावी निरोधक युक्ति सिद्ध होती है तथा इसके और दण्ड के बीच भ्रमित नहीं होना चाहिए।

व्यग्रता तथा भय

व्यग्रता से कु-अनुकूलित तथा अनुकूलित दोनों व्यवहारों के तरीकों को सामने लाता है। व्यग्रता, परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया की प्रबलता, अवधि तथा अभिव्यक्ति की अनुपयुक्तता के कारण कु-अनुकूलित हो जाती है। व्यग्रता अनुकूलित रूप से भी कार्य करती है तथा जीवन में विभिन्न चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने के लिए बचाव तथा तैयारी के लिए जरूरी है– उदाहरण के लिए, परीक्षाएं।

व्यग्रता को कु-अनुकूलित व्यवहार कहा जाता है जब यह बोलने संबंधी समस्या के रूप में प्रदर्शित होती है जैसे कि हकलाना, तुतलाना, व्याख्या न किये जा सकने वाले सिरदर्द, पेटदर्द, अनिद्रा, अतिभावुकता आदि के लक्षणों के रूप में।

उदाहरण

सोनल ने 10 वर्ष की आयु में हकलाना शुरू किया। वह एक बहुत सक्रिय बच्ची थी, जिसने हकलाना शुरू करने से पहले, शारीरिक संकेतों के माध्यम से तनावों को अभिव्यक्त किया था, जैसे कि अपने मुँह को बार-बार घुमाना, आकुलता तथा अन्य अनैच्छिक प्रकृति की अन्य छोटी-छोटी हरकतें। उसके माता-पिता आलोचनात्मक, अत्यधिक रौब जमाने वाले तथा उसके साथ कठोर थे। थोड़े समय के बाद, उसे शब्दों को बोलने तथा अपने आप को अभिव्यक्त करने में कठिनाई होने लगी। उसके शब्द असंगत रूप से और हाँफते हुए निकलते थे।

ये परिस्थितियाँ व्यापक रूप से सुधारे जा सकने वाली हैं, लेकिन सुधारात्मक उपाय जितनी जल्दी किये जाएं उतना ही बेहतर है। यदि सुधारा नहीं गया तो यह जल्दी ही व्यवहार का हिस्सा बन जाता है और फिर इसके सुधार में अधिक लम्बा समय लगता है। मनोवैज्ञानिक विद्यार्थी को उन मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों की पहचान करने में सहायता कर सकता है जो समस्या का कारण हैं, तथा उसे सांस लेने तथा तनाव मुक्ति की बेहतर तकनीक सिखा सकता है।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

4) निम्नलिखित का संक्षिप्त उत्तर दें।

i) आपके द्वारा अवलोकन किये गये किशोरों के उन व्यवहारों का उल्लेख करें जिन्हें पहले से वर्गीकृत व्यवहार में जोड़ा जा सकता हो।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अंतर्मुखी विद्यार्थियों की तुलना में आक्रामक विद्यार्थियों की पहचान अधिक आसानी से हो जाती है। क्यों?

.....

.....

.....

.....

5) स्तम्भ **ए** में दिये गये वक्तव्यों का स्तम्भ **बी** के साथ मिलान करें।

ए	**बी**
i) परीक्षा से पहले परेशान हो जाता है तथा उल्टियाँ करता है	a) अन्तर्मुखी
ii) कक्षा में जो हो रहा है उसका पालन नहीं करता	b) उपलब्धि संबंधी व्यग्रता
iii) अकेला रहना पसन्द करता है तथा समूह गतिवधियों से अलग रहता/रहती है	c) अकारण अनुपस्थित होना
iv) बहुत अथवा बार-बार होने वाले जख्मों को अक्सर अनदेखा किया जाता है	d) शारीरिक रूप से प्रताड़ित
v) कक्षाकक्ष से अनुपस्थिति	e) समझने में कमजोर

6) दिए गए वक्तव्यों को सत्य अथवा असत्य के रूप में स्पष्ट करें।

i) बच्चे अक्सर नहीं जानते हैं कि वे अपनी आवश्यकताओं के लिए सामाजिक संतुष्टि कैसे प्राप्त करें। (सत्य/असत्य)

ii) एक बच्चा अवलोकित व्यवहार का नकल करते हुए अपनी किताबें कक्षाकक्ष में इधर से उधर फेंक सकता है। (सत्य/असत्य)

iii) एक धौंस दिखाने वाला व्यक्तिगत संतुष्टि पाने के लिए अपने आसामाजिक तरीके के बारे में अवगत होता है। (सत्य/असत्य)

iv) एक दिखावा अक्सर पहचान या ध्यान पाने का प्रयास होता है। (सत्य/असत्य)

v) पहली बार च्यूविंग गम खाते पकड़े जाने पर एक विद्यार्थी को दण्डित किया जाना चाहिए। (सत्य/असत्य)

vi) घर का एक सम्मानजनक वातावरण बच्चे को अधिकारियों के प्रति अशिष्ट बनाएगा। (सत्य/असत्य)

7) निम्नलिखित का उत्तर 4 से 5 पंक्तियों में दें।

i) शिक्षक के ऐसे किसी तीन व्यवहारों का उल्लेख करें जिन्हें विद्यार्थियों में व्यवहार संबंधी समस्याओं के लिए उत्तरदायी माना जा सकता है।

.....

.....

.....

ii) क्या एक शिक्षक को यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि विद्यार्थी के अवलोकन योग्य व्यवहार के नीचे क्या है। क्यों?

.....

.....

.....

iii) शिक्षक को व्यवहारात्मक समस्याओं के प्रकारों का ज्ञान क्यों होना चाहिए?

.....

.....

.....

15.6 व्यवहारात्मक समस्याओं का सामना करने के सुझाव

15.6.1 क्या दण्ड व्यवहार को सुधारता है?

एक शिक्षक जब भी जानबूझकर एक विद्यार्थी को शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट पहुँचा रहा हो अथवा उसे दूसरे विद्यार्थी के साथ असहज कर रहा हो, वह उसे दण्डित कर रहा है। इससे पहले कि हम आगे बढें, एक गलतफहमी अवश्य दूर की जानी चाहिए।

आनन्द को दबा कर रखने तथा दण्ड के थोपे जाने में एक ठोस गुणात्मक अन्तर है। एक विद्यार्थी को मध्यावकाश के दौरान बाहर जाने की सुविधा से वंचित किया जा सकता है क्योंकि उसने सुरक्षा नियमों की अवज्ञा की तथा अपने तथा अपने सहपाठियों के स्वास्थ्य को खतरे में डाला। जाहिर है, इससे उसे कुछ कष्ट पहुँचेगा। हालांकि यह मारने, मित्र समूह के सामने उद्देश्यपूर्ण तरीके से शर्मिन्दा करने या भारी किताबों को हाथ आगे की ओर सीधे करके तब तक पकड़े रहने, जबतक कि थक कर पस्त न हो जाएं, इन सबसे काफी अलग है।

बच्चे का बुरे अनुभव को दुबारा महसूस करने का डर, उसके द्वारा अवांछित व्यवहार बन्द कर देने का एक प्रमुख कारण होता है। यह एक सकारात्मक तकनीक है। शोध यह दिखाता है कि दण्ड पथभ्रष्ट व्यवहार को थोड़े समय के लिए दबा सकता है, लेकिन यह बुरी आदत को कमजोर नहीं करता।

पथभ्रष्ट व्यवहार को समाप्त कर देने के लिए दण्ड केवल तब काम करता है जब एक सही वैकल्पिक व्यवहार किया जाता है तथा उसे सुदृढ किया जाता है।

शिक्षक जो दण्डात्मक नियंत्रण तकनीकों का भरपूर इस्तेमाल करते हैं, वे अक्सर अपने काम का बचाव यह कहकर करते हैं कि ''यह काम करता है''। आमतौर पर शिक्षक के कहने का यह तात्पर्य होता है कि इससे पथभ्रष्टता न होती अथवा न फैलती। शोध इस सिद्धान्त की पुष्टि करता है कि दण्ड जितने लम्बे समय तक के लिए होता है, उतना ही लम्बे समय तक के लिए दण्ड की प्रतिक्रिया दब जाएगी।

15.6.2 व्यवहार प्रबंधन हेतु तकनीक

कुछ नियंत्रण तकनीकें जो कक्षाकक्ष में व्यवहार संबंधी समस्याओं के प्रबंधन में प्रभावी सिद्ध हुई हैं, वे हैं :

विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों का निर्देशन

1) संकेत जैसे कि होठों पर ऊँगली रखना, त्यौरी चढाना, या शिक्षक का नापसंदगी से सिर हिलाना, यह सब विद्यार्थियों को शान्तिपूर्वक वापस उनके काम पर लगाने के पर्याप्त हो सकता है।

2) सर्वाधिक शोर करने वाले जोड़े के समीप चला जाना उन्हें कक्षाकक्ष के उपयुक्त शिष्टाचार की याद दिला सकता है।

3) विद्यार्थी की रुचि बढायी जा सकती है यदि शिक्षक कहता है ''तुम जो लिख रहे हो, वह एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट है। क्या मैं देख सकता हूँ कि यह कैसी बनी है?''

4) कुछ क्षणों के लिए शोर को अनदेखा करना एक तकनीक हो सकती है यदि शिक्षक को यह विश्वास हो कि शोर जल्द ही अपने आप समाप्त हो जाएगा।

5) किसी आदेश के दिए जाने में आवाज की स्पष्टता से परिणाम आते हैं। उदाहरण के लिए, 'जॉन, अपनी डेस्क पर तबला बजाना बन्द करो तथा अंकगणित की उन समस्याओं को हल करने में व्यस्त हो जाओ।'

6) यह जताने के लिए कि 'मैं साफ कह रहा हूँ' एक दृढ तकनीक। एक गंभीर, पेशेवर स्वर, उन विद्यार्थियों की ओर जाना, जो व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं, अथवा उन्हें घूरना जबतक कि वे रुक न जाएं : यह सभी एक शिक्षक द्वारा नियंत्रण के प्रयासों को दृढता प्रदान करता है।

7) शोर से निपटने के लिए एक नियत कार्य केन्द्रित तकनीक 'मैं इस कक्षा के पीछे से शोर सुन रही हूँ। यदि ऐसा होता रहा तो हम कभी भी यह सीखना पूरा नहीं कर पाएंगे कि वर्गमूल कैसे करें।'

8) अपनी तकनीकों के भण्डार को बढाएं। दुर्व्यवहार को नियंत्रित करने का एक हिस्सा है सही तकनीक का सही समय पर उपयोग, चूंकि विद्यार्थी अलग-अलग होते हैं तथा अलग तरीकों से प्रतिक्रिया करते हैं।

9) अपनी कक्षा के नेतृत्वकर्ताओं को अच्छी तरह जानें। प्रत्येक विद्यार्थी को अच्छी तरह से जानना, अनुशासन की समस्या की संभावना को कम करता है। आप एक विद्यार्थी को उसके अच्छे व्यवहार के लिए पुरस्कृत करें उससे पहले यह जानना महत्वपूर्ण है कि कौन सी चीजें उसे बढावा देती हैं।

10) जितना ज्यादा किसी विषय को रुचिकर बनाया जा सकता है, शिक्षक के नियंत्रण के प्रयास उतने ही प्रभावी होते हैं।

11) विद्यार्थियों के सकारात्मक गुणों को इंगित कर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

12) जब एक कम ध्यान केन्द्रित करने वाला विद्यार्थी एक दिये गये कार्य को उपयुक्त तरीके से कर रहा हो तो सकारात्मक टिप्पणी दें। उसे यह जानने दें कि वह रचनात्मक रूप सें कार्य कर रही/रहा है। उसकी प्रशंसा करें।

13) व्यवधानकारी व्यवहार को समय रहते रोकें। परिस्थितियों के हाथ से निकलने तक प्रतीक्षा न करें। स्वयं के गुस्सा होने तथा नियंत्रण खोने से पहले अथवा पूरी कक्षा के इसमें शामिल होने से पहले इसे रोकें।

14) सीमा निर्धारित करें तथा एक सा, स्पष्ट मूल सिद्धान्त बनाये रखें। उसे यह ज्ञात है कि क्या उपयुक्त या अनुपयुक्त है। उसे यह जानने की आवश्यकता है कि उसके

व्यवहार के क्या परिणाम होंगे। परिणाम देखने का एक सा वैध तरीका रखें। धमकी तथा रिश्वत काम नहीं करेंगे।

कुछ ऐसे कार्य हैं जिनसे हमें विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करते हुए परहेज करना चाहिए। कुछ ऐसे कार्य नीचे सूचीबद्ध किए गए हैं।

1) निर्दयतापूर्ण बल प्रयोग।

2) खराब व्यवहार के लिए विद्यार्थी पर दोषारोपण।

3) विद्यार्थी के व्यवहार की तुलना उसके मित्र-समूह अथवा भाई-बहनों से करना।

4) बहस करना– आप एक विद्यार्थी से बहस में नहीं जीत सकते। सामान्यतया, आप दोनों हारते हैं।

5) विद्यार्थी को उसके मित्र-समूह अथवा दूसरे बड़ों के सामने शर्मिन्दा करना।

6) विद्यार्थी को ऐसे गतिविधियों से बाहर कर देना जिसमें वह अच्छा कर रहा/रही है तथा उसे करने में आनन्दित होता/होती है।

7) विद्यार्थी का उसकी गलतियों के लिए मजाक उड़ाना।

8) विद्यार्थी को वर्गीकृत करना।

समस्याओं के विषय में तथा विकल्पों के बारे में अग्रिम सोचना, जैसा कि यहाँ सुझाया गया है, माता-पिता/शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को मुसीबत से बचा सकता है।

15.6.3 व्यवहार परिष्करण हेतु तकनीक

यह तकनीक माता-पिता तथा शिक्षकों के लिए सहायक है जो बच्चों से अधिक प्रभावी तरीके से जुड़ना चाहते हैं और उनके शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार से सर्वाधिक स्वस्थ तरीके से बढ़ने में सहायक होना चाहते हैं। इस संदर्भ में उपयोग किए जाने वाले प्रमुख शब्द हैं :

सुदृढीकरण

सुदृढीकरण एक ऐसे व्यवहार से होने वाला परिणाम है जिसकी रूपरेखा व्यवहार के होने को भविष्य में बढाने के लिए बनायी जाती है। एक बच्चा अपना काम सफाई से करेगा यदि हर बार उसके ऐसा करने पर उसकी माँ/शिक्षक उसे यह बताते हैं कि वे उसके प्रयासों की कितनी सराहना करते हैं।

दण्ड

दण्ड किसी व्यवहार के पश्चात् होने वाला वह परिणाम है जिसे इस प्रकार तैयार किया गया हो कि वह भविष्य में उस व्यवहार के होने में कमी लाए।

उदाहरण : एक बच्चा जब भी अपनी बहन को मारता है, उससे कुर्सी पर बैठ जाने के लिए कहा जाता है।

विलोप

किसी व्यवहार के होने को कम करने के लिए उसपर कोई प्रतिक्रिया नहीं देना विलोप है।

उदाहरण : एक बच्चा जो नखरे कर रहा है, उसकी माता द्वारा उसपर कोई ध्यान नहीं दिया जाता (उपेक्षा की जाती है), वह नखरे करना बन्द कर देगा।

आकार देना

वांछित व्यवहार के निकट और निकट के पहुँच का सुदृढीकरण ही आकार देना है।

उदाहरण : एक माँ को उसके अत्यधिक निर्भर बच्चे को अधिक स्वतंत्र बनाने में सहायता देने में प्रक्रिया को छोटे-छोटे शुरुआती प्रयासों के साथ प्रारंभ किया जाना चाहिए तथा हर प्रयास को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। बच्चे की तैयार के अनुरूप, हर (प्रयास) चरण समय लेता है, अतः धैर्य महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे बच्चा कदम दर कदम प्रगति करता है, पिछले कदम के लिए सुदृढीकरण को हटा देना चाहिए।

संगतता

एक चुने गये तरीके से किसी चीज का अनुकरण करना संगतता है।

उदाहरण : एक बच्चा हर बार बिस्तर पर रखे जाने के बाद उससे बाहर आ जाता है, माता-पिता को चाहिए कि वह बच्चे को तुरंत ही वापस बिस्तर में पहुँचा दें।

अवलोकन

अवलोकन एक व्यवहार को विशेष अन्तराल के लिए देखना है जिससे कि उस व्यवहार के होने की बारंबारता निर्धारित की जा सके।

उदाहरण : एक बच्चा अतिसक्रिय है तथा अपने मित्र-समूह का ध्यान भंग कर रहा है; शिक्षक इस बात को दर्ज करता है कि उस बच्चे ने कितनी बार खीजने के व्यवहार का प्रदर्शन किया।

अभिलेखन

किसी विशिष्ट व्यवहार के होने कई बार होने के व्यवस्थित तरीके से अभिलेख रखने को अभिलेखन कहते हैं।

विद्यार्थी का नाम : .....

दिनांक : .....

1 मिनट	2 मिनट ....
3 मिनट	4 मिनट ....
5 मिनट	6 मिनट ....
7 मिनट	8 मिनट ....

चित्र 1: एक व्यवहार कितनी बार होता है उसके व्यवस्थित अभिलेख रखने हेतु चार्ट का नमूना

परिणाम

परिणाम वह घटना है जो व्यवहार के होने के बाद होती है।

उदाहरण : एक बच्चे ने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया और अब इसके पुरस्कार स्वरूप (परिणाम) उसे अपना पसंदीदा टी.वी. कार्यक्रम देखने की अनुमति है।

बेसलाइन

हस्तक्षेप से पूर्व जिस आवृत्ति से एक व्यवहार हो रहा हो, वह बेसलाइन है।

उदाहरण : इससे पहले कि व्यवहार में बदलाव लाने के प्रयास किए जाएं, एक अवलोकनकर्ता शिकायत (अनुपयुक्त रूप से) करने की आवृत्ति को दर्ज करता है।

छल/चतुराई से काम निकालना

छल/चतुराई से काम निकालना, व्यवहार में बदलाव लाने के लिए एक हस्तक्षेप तकनीक है।

उदाहरण : एक बच्चा अपनी किताबें फेंकता है। इस व्यवहार में कमी लाने के लिए बच्चे को हर बार उसके द्वारा किताबें फेंकने पर एक कुर्सी पर बिठा दिया जाता है (टाईम आऊट)।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए

टिप्पणी: क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

8) दिये गये प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर दें।

i) व्यवहार संबंधी समस्याओं का सामना करने के लिए कोई एक सर्वश्रेष्ठ तरीका क्यों नहीं हो सकता?

.....

.....

.....

ii) दण्ड का प्रयोग क्यों न्यूनतम होना चाहिए?

.....

.....

.....

15.7 उपचारात्मक युक्तियाँ

कुछ ऐसे उपाय जिन्हें शिक्षकों, माता-पिता तथा परामर्शदाताओं द्वारा बच्चों के व्यवहार संबंधी समस्याओं के प्रबंधन के लिए अपनाया जा सकता है, निम्नलिखित हैं:

15.7.1 शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए चिंता करनी चाहिए न कि केवल उनकी अकादमिक उपलब्धियों की। शिक्षक ऐसी स्थिति में होता है, जहाँ से वह स्वस्थ व्यक्तित्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सके तथा इस संदर्भ में उसके पास अवसर तथा दायित्व

हो। शिक्षक, जिसे कि मानव व्यवहार के विषय में प्रशिक्षण प्राप्त होता है तथा जिसके पास बच्चों का कक्षाकक्ष में अवलोकन करने का अवसर होता है, वह व्यवहार संबंधी समस्या वाले विद्यार्थियों की पहचान करने की बेहतर स्थिति में होता है। विद्यार्थियों की अधिकांश व्यवहार संबंधी समस्याएं, मामूली से मध्यम समस्याएं होती हैं जिन्हें नियमित कक्षाकक्ष तथा घर में प्रभावी तरीके से उपचारित किया जा सकता है। हालांकि, व्यवहार संबंधी गंभीर समस्याओं के मामले एक मनोवैज्ञानिक द्वारा ही देखे जाने चाहिए।

एक शिक्षक, जो इनके साथ व्यवहार कर रहा हो, उसे प्रभावी तथा रचनात्मक होना ही चाहिए जिससे वह पाठ्यचर्या सामग्री तथा गतिविधियों को विद्यार्थी विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूल बना सके। मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित वातावरण का निर्माण कर शिक्षक वैसे विद्यार्थी की सहायता कर सकते हैं जिनकी आत्म-छवि अपर्याप्त हो। ऐसे वातावरण में विद्यार्थी, बिना नकारे जाने के भय के, स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकेगा/सकेगी। विद्यार्थियों के लिए बिना शर्त सकारात्मक सम्मान का प्रदर्शन कर शिक्षक विद्यार्थी विशेष को अपनी सकारात्मक तथा नकारात्मक भावनाओं को स्वतंत्र रूप से खोजबीन के लिए अभिप्रेरित कर सकते हैं।

यदि हम घर और स्कूल में ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जिसमें विद्यार्थी को निरंतर स्नेह तथा सम्मान प्राप्त हो तो अधिकांश व्यवहार संबंधी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। लोग दूसरों की अच्छी भावना और सकारात्मक सम्मान का मूल्य समझते हैं तथा वे इसे प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

हालांकि, विद्यार्थियों की व्यवहार संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे शिक्षक का प्राथमिक कार्य यह है कि वह उन्हें अपने सामाजिक कौशलों को बेहतर बनाना सिखाए – विद्यार्थियों को उनके कु-अनुकूलित व्यवहार को सामाजिक रूप से अधिक स्वीकृत प्रतिक्रियाओं से बदलने से सहायता देना। यह अक्सर एक कठिन तथा अत्यधिक अपेक्षा रखने वाला कार्य होता है, विशेषकर जब शिक्षक कभी-कभी, शायद ही विद्यार्थियों के व्यवहार को प्रभावित करने वाले सभी कारकों को जानते हैं। इन सबके ऊपर, कभी-कभी बहुत सारे ऐसे योगदान देने वाले कारक होते हैं जिनपर शिक्षक का बहुत थोड़ा अथवा कोई भी नियंत्रण नहीं होता (उदाहरण के लिए, अपराधी प्रवृत्ति का दोस्त जिसके साथ विद्यार्थी विद्यालय के बाद मिलता-जुलता है)। इन सीमाओं के बावजूद, विद्यार्थी के अतीत पर रोना-पीटना शायद ही कुछ भला करता है (जिसे कोई भी नहीं बदल सकता है) और न ही कक्षाकक्ष में विद्यार्थी की सहायता करने में असफल रहने के बहाने के तौर पर के वातावरण के उन सभी चीजों का उपयोग करना जिन्हें बदला नहीं जा सकता है।

धमकी देने की बजाए शिक्षक तार्किक, वास्तविक तथा प्राकृतिक परिणाम स्थापित कर सकता है और इसे (आशा है) विद्यार्थियों के लिए अधिक उत्तरदायी गतिविधि के लिए अधिक आरामदायक बना सकता है। परिणामों को परिस्थिति के अनुरूप होना चाहिए और उन्हें ऐसा होना चाहिए जिसकी अनुपालना की जा सके।

उदाहरण के लिए, ''यदि तुम्हें चोरी करते पाया तो मैं तुम्हारे हाथ तोड़ दूंगा!'' यदि वह दुबारा चोरी करता है तो आपके पास क्या विकल्प है?

15.7.2 माता-पिता की भूमिका

किशोर सामाजिक बनाये जाने के लिए, उनकी सुरक्षा तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राथमिक रूप से अपने माता-पिता पर निर्भर होते हैं। समर्थ माता-पिता अपने बच्चे में

सामर्थ्य विकसित करने की ओर प्रवृत्त होते हैं तथा असमर्थ अथवा नकारने वाले माता-पिता अपने बच्चे को स्थायी रूप से अक्षम बना सकते हैं। उचित लालन-पालन के अभ्यासों के महत्व के बावजूद, ऐसे कौशल केवल अनौपचारिक रूप से, अधिकांशतः परिवार के भीतर उदाहरणों के द्वारा सिखाये जाते हैं।

लालन-पालन और व्यवहार संबंधी सिद्धान्त, माता-पिता द्वारा बच्चों के खराब निर्वहन से बचाते हैं तथा सर्वोत्कृष्ट बाल विकास को प्रोत्साहित करते हैं। अधिकांश माता-पिता ऐसे निर्देशों को तब तलाशते हैं जब उनके बच्चे में कष्टदायी समस्या विकसित हो जाती है, न कि एक निर्देशात्मक अथवा सुरक्षात्मक उपाय के रूप में।

बच्चे की व्यवहार संबंधी समस्याओं से सुरक्षा तथा उपचार के नये निर्देशों में माता-पिता के लिए प्रस्तुत किये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा बच्चों के लिए आत्म-नियमन प्रशिक्षण को शामिल किया गया है। माता-पिता प्रशिक्षण कार्यक्रम लोकप्रिय हो रहे हैं तथा माता-पिता के बच्चों के साथ संवाद में परिवर्तन लाने में प्रभावी सिद्ध हुए हैं तथा इनका पूरे परिवार पर सकारात्मक प्रभाव हुआ है।

आत्म-नियमन कार्यक्रम आवेगी, आक्रामक तथा विद्रोही विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है। उदाहरण के लिए, जब शिक्षक माता-पिता से कहते हैं कि विद्यार्थी अक्सर विद्यालय से बिना छुट्टी लिए अनुपस्थित रहता है, चोरी में शामिल है अथवा आक्रामक है तो माता-पिता के लिए अक्सर इसे स्वीकार करना कठिन होता है। हालांकि, आवांछित व्यवहार के प्रति अस्वीकार्यता केवल समस्या को और अधिक गंभीर बनायेगी। इसके बदले, माता-पिता को अंतर्निहित कारकों को समझने का प्रयास करना चाहिए जिनसे ऐसी व्यवहार संबंधी समस्याएं हो रही हैं तथा उन्हें सुलझाना चाहिए या आवश्यक होने पर पेशेवर सहायता लेनी चाहिए।

15.7.3 परामर्शदाता/मनोवैज्ञानिक की भूमिका

परामर्शदाता के दो प्राथमिक दायित्व होते हैं, पहला वह यह सुनिश्चित करे कि वह बच्चे को और अधिक नुकसान न पहुँचा दे तथा दूसरा, विद्यार्थी के वर्तमान वातावरण का बदला जाना संभव नहीं होने के बावजूद वर्तमान वातावरण का चतुराई से, अधिक उपयुक्त व्यवहार के विकास के लिए इस्तेमाल करे। यहाँ वर्तमान तथा भविष्य पर जोर दिया जाता है, न कि अतीत पर तथा बच्चे के हित में विद्यालय और घर के वातावरण के सुधार पर अथवा सामुदायिक संसाधनों का उपयोग किये जाने पर।

जब परामर्शदाता द्वारा सहयोग के लिए अनुरोध प्राप्त किया जाता है, वह सामान्यतया शिक्षक/माता-पिता से बात करते हैं जिससे उन्हें बच्चे की समस्या का प्रत्यक्ष विवरण प्राप्त हो सके। संदर्भ स्रोतों से प्राप्त, बच्चे की समस्या की विस्तृत तस्वीर तथा समझ का अनुसरण करते हुए, वह तब यह निर्णय लेता/लेती है कि बच्चे की विशिष्ट समस्या का सामना माता-पिता द्वारा या शिक्षक या स्वयं उसके द्वारा किया जा सकता है।

यदि परामर्शदाता को यह महसूस होता है कि समस्या गंभीर है तो वह अपने अध्ययन में विभिन्न निदानात्मक तकनीकों का उपयोग करता है, जैसे कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण, साक्षात्कार, बच्चे का अवलोकन आदि। कुछ मामलों में माता-पिता से बातचीत करके अथवा शारीरिक परीक्षण द्वारा बच्चे के शारीरिक स्वास्थ्य का भी निर्धारण किया जा सकता है।

विस्तृत अध्ययन के पश्चात्, पाए गये परिणामों पर बच्चे के माता-पिता के साथ चर्चा की जाएगी तथा उसकी सहायता के लिए विभिन्न अनुशंसाएं की जाएंगी। अनुशंसा में बच्चे के

उपचार के साथ माता-पिता दोनों अथवा किसी एक के लिए परामर्श हो सकता है। जैसा कि बच्चे को सहायता की आवश्यकता होती है, वैसे ही माता-पिता के लिए भी यह जानना महत्वपूर्ण होता है कि वे घर पर बच्चे के साथ कैसे कार्य करें। परामर्शदाता सहायक प्रक्रियाओं के विषय में बच्चे के शिक्षक से भी चर्चा करेंगे। एक बार सहयोग की योजना स्थापित हो जाने के बाद वह बच्चे की प्रगति पर नजर रखने के लिए माता-पिता तथा शिक्षक से संपर्क बनाए रखते/रखतीं हैं, जिससे यह निर्धारित हो सके कि जो रणनीति तैयार की गयी है वह बच्चे के लिए कार्य कर रही है अथवा उसमें बदलाव की आवश्यकता है तथा यह तय किया जा सके कि आगे और सहायता की आवश्यकता है या नहीं।

परामर्शदाता भी शिक्षकों के एक समूह से बात कर सकते हैं और उन्हें एक सामान्य तरीके से विद्यार्थियों की कठिनाईयों के विषय में व्याख्या कर सकते हैं तथा ऐसे बच्चों के साथ संपर्क में आने वाले शिक्षकों के साथ उन विधियों पर चर्चा कर सकते हैं जिनसे वे ऐसे बच्चों की सहायता कर सकते हैं अथवा इसके लिए एक कार्यक्रम की योजना बना सकते हैं। परामर्शदाता द्वारा विद्यालय को अभिभावक शिक्षक संघ अर्थात् पीटीए की बैठकों अथवा अभिभावकों के साथ समूह चर्चा में सहायता दी जा सकती है।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए

टिप्पणी: क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

9) दिये गये वक्तव्यों को सत्य अथवा असत्य के रूप में सही का चिन्ह (√) लगाएं।

i) एक शिक्षक विद्यार्थियों की व्यवहार संबंधी समस्याओं की पहचान करने की बेहतर स्थिति में होता है। (सत्य/असत्य)

ii) हल्की तथा सामान्य समस्याओं से माता-पिता तथा शिक्षकों द्वारा प्रभावशाली तरीके से निपटा जा सकता है। (सत्य/असत्य)

iii) बच्चों के लिए दण्डात्मक तरीका, परिस्थितियों में सुधार के प्रयास से बेहतर है। (सत्य/असत्य)

iv) शिक्षक तथा माता-पिता सभी प्रकार की समस्याओं को पराजित करने में बच्चों की सहायता कर सकते हैं। (सत्य/असत्य)

v) एक परामर्शदाता को समस्या पर कार्य करने से पूर्व बच्चे की समस्या का आँकलन करना चाहिए। (सत्य/असत्य)

vi) एक परामर्शदाता को बच्चों के व्यवहार संबंधी समस्याओं को समझने तथा उनका सामना करने में माता-पिता तथा शिक्षक के सहायता की आवश्यकता नहीं होती। (सत्य/असत्य)

10) नीचे दिये गये प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर दें।

i) ऐसे कुछ सकारात्मक तरीकों का उल्लेख करें, जिन्हें शिक्षक/माता-पिता व्यवहार संबंधी समस्याओं में सुधार लाने अथवा उन्हें सही करने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

.....

.....

.....

ii) माता-पिता अपने बच्चों को व्यवहार संबंधी समस्याओं से निपटने में कैसे सहायता कर सकते हैं?

.....

.....

.....

iii) परामर्शदाता को इलाज के लिए रणनीतियाँ बनाने से पहले बच्चों के व्यवहार के आँकलन की आवश्यकता क्यों होती है?

.....

.....

15.8 सारांश

व्यवहार संबंधी समस्याओं से प्रभावशाली तरीके से निपटने के लिए एक शिक्षक को उन कारकों तथा परिस्थितियों के विषय में अवश्य समझना होगा जो व्यवहार संबंधी समस्याओं तक ले जाते हैं। इनमें से कुछ कारक व्यक्तिगत या सामाजिक आवश्यकताओं, शिक्षक तथा कक्षाकक्ष की परिस्थितियों, घर, सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण को संतुष्ट करने का प्रयास हो सकते हैं। बच्चों की व्यवहार संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए कई सुझाव दिये गये हैं। शिक्षकों तथा माता-पिता को व्यवहार संबंधी समस्याओं में सुधार के लिए दण्डात्मक के बजाए सकारात्मक तरीकों का उपयोग करना चाहिए। कुछ विशेष परिस्थितियों में दण्ड प्रभावी हो सकता है। यह तय करने के लिए कि किस प्रकार का सुधारात्मक उपाय उपयोग में लाया जाए, शिक्षक तथा माता-पिता को बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों तथा इसके दीर्घकालिक परिणामों पर विचार करना चाहिए। सुधारात्मक उपाय को विद्यार्थी-विशेष के अनुकूल भी होना चाहिए।

वैसे बच्चों को, जिन्हें व्यवहार संबंधी समस्याएँ हैं, उन्हें इसे समझने तथा इनका सामना करने के लिए शिक्षकों तथा माता-पिता के सहायता की आवश्यकता होती है जिससे कि वे अपने व्यवहार में बदलाव ला सकें तथा अकादमिक व व्यक्तिगत जीवन में बेहतर कर सकें। शिक्षकों तथा माता-पिता को यह पहचानने का प्रयास करना चाहिए कि व्यवहार संबंधी समस्या के कारण बच्चे के भीतर हैं अथवा वातावरण में। इसके लिए उन्हें व्यक्ति के भीतर के अच्छे तथा सकारात्मक पक्षों को अहमियत देनी होगी तथा उन्हें अपने व्यवहार संबंधी समस्या में बदलाव लाने के लिए सामाजिक रूप से उपयुक्त प्रतिक्रिया देनी होगी।

15.9 इकाई अन्त अभ्यास

1) समुदाय में ऐसी संस्थाओं की एक सूची तैयार करें जो किशोरों को सेवाएं उपलब्ध कराती हैं। उपलब्ध सेवाओं तथा रेफर किये जाने के तरीकों की व्याख्या करें।

2) अपने पास-पड़ोस में एक विद्यालय का भ्रमण करें तथा प्रधानाध्यापक तथा शिक्षकों से उनके कुछ किशोर विद्यार्थियों के प्रचलित व्यवहार संबंधी समस्याओं पर चर्चा करें। ऐसे विद्यार्थियों की सहायता के लिए विद्यालय द्वारा उठाए गये कदमों के विषय में पता लगाएं।